RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 35 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 2 फरवरी 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

लगन हो तो राह बन जाती है

चन्द्र सिंह लस्पाल से बातचीज

ढाकर जाने से पहले तैयारी हो जाती

पांचवी की बोर्ड में ईश्वर सिंह पांगती, धन सिंह निखुर्पा का स्थान भी था

बकरी वालों को पता होता है कैसे जाना है और कब उजाला होगा

मंगल सिंह मर्तोलिया का योगदान समाज में बुनियाद का काम कर रहा है

कार्यालय प्रतिनिधि

दिखावट के इस दौर में अक्सर उन लोगों की चर्चा नहीं हो पाती है जिनकी जरूरी है क्योंकि उनके अनुमान और अनुभव सटीक होते हैं। ऐसे ही अनुभवी चन्द्र सिंह लस्पाल जी के साथ बातचीज प्रस्तुत है। वह कहते हैं- 'लगन हो तो राह बन जाती है।' वाकेई इनके जीवनवृत्त में यह दिखाई देता है। लास्पा-जोहार के रतन सिंह लस्पाल परिवार में हुए सोबन सिंह लस्पाल। इनके पुत्र हुए मोहन सिंह, चन्द्र सिंह, नेत्र सिंह, जगदीश सिंह। स्व. मोहन सिंह जी के विजयप्रकाश सिंह, घनस्याम। नेत्र सिंह जी के अमित और मोहित। जगदीश सिंह जी के गौतम और निशान्त। चन्द्र सिंह जी की सुपुत्री विवाहित वैशाली हैं।

बूबू रतन सिंह की जी का परिवार अपने रीति-रिवाज अनुसार कारोबार और तीन जगह निवास करता रहा है। पहले लास्पा फिर छोरीबगड़। इसके बीच में आते-जातग साईपोलू में भी। पिता रतन सिंह माता श्रीमती नन्दी देवी के घर धारचूला ब्लाक, बंगापानी तहसील के छोरीबड़ग में अप्रैल 1949 को जन्मे चन्द्र सिंह लस्पाल कहते हैं- यदि एक साल भारत-तिब्बत व्यापार और चल जाता तो मुझे भी वह अवसर मिलता जो मौका हमारे बुजुर्गों को तिब्बत जाने का मिलता था।

बूंगा मुनस्यारी में 'शौका निवास' आवास बनाकर जीवन के उत्तरार्द्ध की पारी चाहने वाले चन्द्र सिंह जी स्वास्थ्य कारणों से छड़ायल सुयाल हल्द्वानी स्थित हिमालयन कलौनी में निवास कर रहे हैं। अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए वह बताते हैं, माइग्रेशन में जब उनका परिवार इधर से उधर जाता था तो एक माह तक वह लोग साईपोलू में निवास करते थे। स्कूल की व्यवस्था भी इसी प्रकार की थी। लास्पा से छोरीबगड़ स्कूल चलता था। शिक्षक थे विशवम्भर दत्त जोशी जी। उन दिनों में अल्मोड़ा के युवा चन्द्र सिंह लटवाल जी ने मुझे अपने साथ रखकर बेहतर शिक्षा दी, जिसका परिणाम कक्षा पाँच की बोर्ड परीक्षाओं में मैं पूरे मुनस्यारी ब्लाक में प्रथम आया। इसके बाद भैंसकोट वाले ईश्वर सिंह पांगती और उसके बाद कव्वाधार वाले धन सिंह निखुर्पा रहे। तब कक्षा पाँच की बोर्ड परीक्षाओं की भी धाक थी।

चन्द्र सिंह जी ने हाईस्कूल तक शिक्षा ली लेकिन जिस प्रकार का

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

संघर्ष ने बनाया महिदास को महापुरुष

सूर्यकान्त बाली

जब महिदास ऐतरेय ने देश के लिए विशालकाय ब्राह्मणग्रन्थ लिखा, उस समय तक उनकी स्वीकार्यता के बारे में किसी को कोई शक नहीं था। यह मामला उठाने की जरूरत इसलिए अनुभव हो रही है, क्योंकि महिदास ऐतरेय शूद्र थे और उन्होंने एक ब्राह्मणग्रन्थ लिखा, जो अन्ततः उन्हीं के नाम से मशहूर हो गया। जिस कालखण्ड में उन्होंने अपना ब्राह्मणग्रन्थ लिखा, तब यह समस्या उठी ही नहीं कि वे शूद्र हैं या ब्राह्मण। न केवल उनके ऐतरेय ब्राह्मण को पूरे साहित्य में मान्यता मिली, बल्कि उस किताब को एक विशेष दर्जा भी मिला। विद्वान लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि ऐतरेय ब्राह्मण ही पहला ब्राह्मणग्रन्थ है और महिदास की इस रचना के बाद तो ब्राह्मणग्रन्थ लिखे जाने की परम्परा का सूत्रपात हुआ। अगर ऐसा है तो महिदास को एक ऐसी नई शैली का प्रवर्तक होने का श्रेय दिया जाना चाहिए, जिसने करीब पाँच सौ वर्ष तक उस तरह का साहित्य लिखने की प्रेरणा उत्तरवर्ती लेखकों में पैदा कर दी। इसमें यह मजेदार सूचना जोड़ने का मन कर रहा है कि उपलब्ध चौदह ब्राह्मणग्रन्थों में अकेला ऐतरेय ब्राह्मण ऐसा है, जिसे उसके लेखक के नाम से नाम से और मशहूरी मिली। क्योंकि बाद में कोई भी लेखक वैसा गौरव नहीं पा सका, यह खोज का मामला हो सकता है। पर निष्कर्ष यह है कि आज से करीब साढ़े चार हजार साल पहले एक ऐसा ब्राह्मणग्रन्थ लिखा गया, जो अपनी शैली का पहला वैसा ग्रन्थ था, जिसके लेखक महिदास ऐतराय शूद्र थे और शूद्र होने के बावजूद उनके महाग्रन्थ को न केवल उनका नाम मिला, बल्कि मान्यता भी मिली और सदियों तक अनुकरण भी मिला। इस हद तक परिपूर्ण और प्रभावशाली था ऐतरेय ब्राह्मण कि उसके बाद लिखे गए शतपथ ब्राह्मण को बराबरी का दर्जा पाने के लिए उस वक्त के महानायक याज्ञवल्क्य के प्रभावशाली व्यक्तित्व का सहारा लेना पड़ा।

जाहिर है कि इतना महत्वपूर्ण स्थान पाने के लिए ऐतरेय को काफी संघर्ष करना पड़ा होगा। जैसे वैदिक मन्त्रों के संकलन ऋग्वेद में जगह बनाने के लिए शूद्र ऋषि कवष ऐलूष को खासी मशक्कत करनी पड़ी थी और फिर जब उन्होंने अक्षसूक्त जैसी परमसाहिसक मन्त्ररचना की तो वैदिक पुरोधा जुआरी के विलाप पर लिखे इस सूक्त को ऋग्वेद का हिस्सा बनाए बिना नहीं रहे सके, वैसी ही कुछ मेहनत महिदास ऐतरेय को भी करनी पड़ी होगी। क्या थी वह मेहनत? कैसे मालूम पड़ा कि उन्होंने मेहनत की? इन सवालों का जवाब थोड़ी देर में। पर पहले यह समझ लिया जाए कि महाभारत के पहले के और बाद के वक्त में समाज में शूद्रों को जगह हेय नहीं थी। पढ़ने-लिखने और आगे बढ़ने के स्वाभाविक मौके बेशक उनके पास कम रहे, क्योंकि कार्य विभाजन में उनके जिम्मे काम ही ऐसे आ पड़े कि विद्यार्जन का कोई खास अवकाश उनके पास था ही नहीं। पर अगर अपने सुपुर्द काम और उसकी वजह से बंधे जीवन के बावजूद किसी शूद्र ने कोई उपलब्धि कर ली तो समाज बाहें पसारे उसका स्वागत करने को तैयार था। अगर ऐसा न होता तो न कवष ऐलूष ऋग्वेद में जगह बना पाते और न ही ऐतरेय महिदास बसे पूजनीय ब्राह्मण ग्रन्थकार के रूप में अपूर्व प्रतिष्ठा पा सकते।

चूँकि आगे चलकर शूद्रों की स्थिति उस तरह से स्वीकार्य नहीं रही, इसलिए स्कन्दपुराण के रचयिता को ही नहीं, ऐतरेय ब्राह्मण के व्याख्याकार आचार्य सायण को भी महिदास नामक शूद्र को ब्राह्मण-गर्वित समाज में पूजनीय बनाए रखने के लिए कथाओं का सहारा लेना पड़ा। इन कथाओं का अस्तित्व यह तो साबित करता है कि महिदास को अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए संघर्ष करना पड़ा होगा, पर इनसे यह पता नहीं चलता कि वह संघर्ष था किस तरह का। क्यों? इसलिए कि दोनों की महिदास-कथा एक दूसरे से मेल नहीं खाती।

जो समान निष्कर्ष इन दोनों कथाओं में से उभरते हैं, उन्हें पहले जान लिया जाए। स्कन्दपुराण बेशक कहता है कि महिदास पूर्वजन्म में शूद्र थे (पुराहमभवं शूद्रः यानी पहले जन्म में मैं शूद्र पैदा हुआ था, स्कन्द पुराण 1.2.42) पर हर संकेत सिद्ध करता है कि महिदास शूद्र थे। सायण ने ऐतरेय ब्राह्मण की अपनी व्याख्या की भूमिका में कहानी का जो रूप पेश किया है, उसमें वे शूद्र के अलावा और कुछ नजर नहीं आते। कहानी है कि हारीत ऋषि के वंश में माण्डूकि नाम के एक विद्वान हुए, जिनकी अनेक पत्नियाँ थीं। यहाँ ध्यान देने की बात है कि स्वयं हारीत विवादास्पद रहे हैं, जिनके वंशज माण्डूकि ने अपने को अनेक विवादों के कारण जाने कितने विवादों में फँसा दिया होगा। उन्हीं माण्डूकि की अनेक पत्नियों में एक थीं-इतरा, जिसके पुत्र थे महिदास। इतरा का अर्थ है-दूसरी या परित्यक्ता। यानी महिदास की माँ संकटग्रस्त बना दी गई हागी। उन्हें नाम

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

बायोमेट्रिक उपस्थिति से ज्यादा जरूरी है भागने वालों की पकड़ हो

कुमाऊँ विश्वविद्यालय के डीएसबी परिसर में प्राध्यापकों की बैठक में विश्वविद्यालय की स्वायत्तता को लेकर व्यापक और गम्भीर चर्चा हुई। साथ ही बायोमेट्रिक उपस्थिति का कड़ा विरोध किया गया। मोबाइल के माध्यम से बायोमेट्रिक उपस्थिति में डेटा सुरक्षा को लेकर गम्भीर चिन्ता जताई गई। प्राध्यापकों ने कहा कि बायोमेट्रिक प्रणाली नियमों के अनुरूप नहीं है, इसलिए इसमें सहयोग नहीं किया जाएगा। कहा सिकी भी केन्द्रीय विश्वविद्यालय में इस प्रकर की व्यवस्था लागू नहीं है और इसे थोपने का विरोध किया जाएगा।

मोबाइल के माध्यम से बायोमेट्रिक उपस्थिति का आदेश प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों को आने के बाद से कालेजों में भी सुगबुगाहट हुई लेकिन सचिव के आदेश के बाद महाविद्यालय के शिक्षक चुप कर गये लेकिन इनके भीतर की गुरगुराट महसूस की जा सकती है। बहुत सीधा सा कारण है जब नौकारी पाने वाले को समय का हिसाब देना पड़ेगा तो वह विचार करने लगेगा। देखने में आता है कि निश्चित समय पर बहुत सारे लोग अपने कार्यस्थल पर नहीं होते हैं। नियमानुसार आठ किलोमीटर के दायरे में रहने का पालन न करते हुए दूसरे शहर से आना-जाना करने वाले भी हैं। इसी प्रकार विश्वविद्यालयों का तो पूछा मत.....सबको पता है कि कौन कितना समय अपने कार्य के प्रति समर्पित है। ऐसे चेहरे भी हैं जो नेतागिरी की आड़ में बचते रहे हैं।

कुमाऊँ विश्वविद्यालय के डीएसबी परिसर में प्राध्यापकों की बात एकदम सही है कि स्वायत्तता पर खलल न पड़े। होना भी यही चाहिये कि शिक्षकों को टोकना न पड़े लेकिन देखने में यह आता है कि गिनती भर के जो शिक्षक-कर्मचारी अपने कार्य के प्रति उदासीन हैं और समय से तनख्वाह पाते हैं उनपर लगाम कैसे लगे? बार-बार सवाल उठते हैं कि महाविद्यालय के कतिपय प्राचार्य अनुपस्थित रहते हैं या अपने कार्य बनाकर इधर-उधर हो जाते हैं। जबकि उच्चशिक्षा की कमान जिनके हाथों है, उनका जिम्मेदारी भी उतनी ही ज्यादा है।

शासन-प्रशासन ने भी इस बात को देखना चाहिये कि उच्चशिक्षा के नाम पर जगह-जगह भवनों का निर्माण करा देना ही पर्याप्त नहीं है। डिग्री कालेजों की बाढ़ आ चुकी है, जिसमें सुविधाओं के बिना अनचाहे विषय लेकर कुछ बच्चे प्रवेश ले रहे हैं। छात्र संख्या में बेहद गिरावट आ चुकी है। शिक्षा के गिरते स्तर पर चिन्ता सब कर रहे हैं लेकिन इसकी असल बुनावट पर कोई कार्य नहीं हो रहा है। इसके लिये जरूरी है कि विश्वविद्यालयों का वार्षिक कलैण्डर तय हो और उसी अनुसार कालेजों में प्रवेश-चुनाव-परीक्षा इत्यादि हों। जब सबकुछ समय से होगा, शिक्षक-कर्चचारी स्वस्थ्य वातावरण में होंगे तो कोई परेशानी नहीं होनी है। सुगम-दुर्गम को सजा के रूप में देखा जाता है इसके पीछे भी यही कारण है। गिनती भर के चेहरों के कारण पूरी शिक्षा व्यवस्था को दोष नहीं दिया जा सकता। जब गड़बड़ करने वालों पर सख्ती होगी तो बायोमेट्रिक उपस्थिति की क्या आवश्यकता?

लगन हो तो राह बन.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

व्यवहारिक ज्ञान उनके पास है उससे वह हमेशा सफल रहे।

अपने बचपन की यादों में जाकर वह बताते हैं, मुख्य कार्य भेड़-बकरियों का था और जब ढाकर जाते थे पहले दिन से तैयारी होने लगती थी। रातभर में खाना बन जाता था ताकि लोग अपने जानवरों के साथ सुबह यात्रा पर निकल पड़ें। बकरी वालों को पता होता है कि कैसे जाना है और कब उजाला होगा। भेड़-बकरियों को भी पता होता था कि उनका अगला पड़ाव कहाँ पर होगा, वह वहीं जाकर रुकती। श्री लस्पाल जी बताते हैं कि वस्तु विनियम के उस समय में तिब्बत जाने वाले जौं ले जाते थे क्योंकि वहाँ ज्या-सत्तू मुख्य भोजन रहा है। वहाँ से नमक लाकर जगह-जगह वितरित किया जाता था। बुजुर्गों ने बहुत से मांसाहारी व्यंजन तिब्बत में बनाने सीखे जो यहाँ प्रचलित हो गये।

चन्द्र सिंह जी भले ही भाबर में आ गये हैं लेकिन अपनी पुरानी यादों के साथ ज्वार-मुन्स्यार उनके मन-मस्तिष्क में रहता है। पिघलता हिमालय परिवार के संरक्षक श्री मंगल सिंह मर्तोलिया की समाजसेवा का उल्लेख करते हुए वह कहते हैं- मंगलसिंह का योगदान समाज में बुनियाद का काम कर रहा है। उन्होंने अपने समाज के लिये निस्वार्थभाव से बहुत कुछ किया है। इसके लिये उन्होंने कन्धे में तख्ते-बल्ली ढोकर भी श्रमदान में अग्रणीय भागीदारी की। मुनस्यारी का विवेकानन्द विद्या मन्दिर उनकी देन है। इसी प्रकारी सरस्वती शिशु मन्दिर हो या वनवासी आश्रम विद्यालय, मंगल सिंह जी की भूमिका अग्रणीय है। आज भले ही मर्तोलिया जी अस्वस्थ्य हैं लेकिन सब जानते हैं कि मुनस्यारी के हर काम काज में बढ़चढ़ कर जो भागीदारी मंगल सिंह मर्तोलिया की रही है वह सबके चहेते हैं।

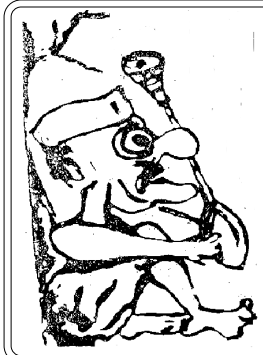

फसक

दाज्यू, सबका अपना नाच चल रहा ठैरा

लाइब आकर मनोरंजन का भी खूब मजा होता है बल

दाज्यू, 2026 में नन्दा राजजात स्थगित कर 2027 में करने के प्रस्ताव के बाद कुरुड़ की महापंचायत ने विरोध करते हुए इसी वर्ष आयोजन का एलान कर दिया। मचे घमासान के बाद अपने फकीर दा बिस्तर से नहीं उठ रहे हैं। कह रहे थे- 'वह अपने घर पर ही धरना देंगे। आखिर यह सब क्या हो रहा है। कुरूढ़ और नौटी से यात्रा शुरू करने के मतभेद का क्या मतलब?' दाज्यू, फकीर दा ठीक ही कह रहे हैं लेकिन कलजुग में कौन सूझबूझ कर रहा है? सब अपनी यात्रा, अपना बोरा बिस्तर, अपना कमण्डल, अपनी ढोलक अपना नाच.. .चल रहा है। नई टिहरी के जाखणीधार ब्लाक की शिक्षिका ने शिक्षक नेता पर शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न का आरोप लगाया है। शिक्षक का कहना है- 'मैडम को मकान बनाने के लिये 80 हजार रुपये दिए थे। रकम मांगी तो आरोप लगा रही है।' दाज्यू, लग्गो-लिपटा में यह सब हो जाने वाला ठैरा। किच्छा विधायक तिलक राज बेहड़ के सुपुत्र पार्षद सौरभ को नकाबपोश युवकों ने हमला कर घायल कर दिया तो बबाल मचने लगा। जब सच्चाई पता लगी तो विधायक की डड़ाडाड़ सुनाई दी। विधायक के सुपुत्र ने खुद ही यह प्रपंच रचा था बल। इसके बाद विधायक बेहड़ ने सभी से माफी मांगते हुए कहा- 'इस नकारे बेटे से उनका सम्बन्ध नहीं है। इसे सजा मिलनी चाहिये।' उधमसिंह नगर जिले की राजनीति में पता नहीं क्या जो होने वाला है। उधर सोशल मीडिया पर लाइब दिखाने वाले सूंघते हुए घूम रहे हैं। दाज्यू, लाइब आकर मनोरंजन का भी खूब मजा होता है बल। दाज्यू, गदरपुर विधायक अरविन्द पाण्डे के पुत्र अतुल और उनके रिश्तेदारों की सुरक्षा की मांग भी पुलिस से की गई। जबकि विधायक पुत्र के खिलाफ मारपीट की रिपोर्ट पुलिस को सौंपी जा चुकी है। किसी विवादित भूमि को लेकर मामला उबल रहा है बल। सरकार के अतिक्रमण विरोधी अभियान के तहत विधायक पाण्डे के गूलरभोज स्थित आवास प्रशासन के निशाने पर है। तहसील प्रकशासन ने विधायक आवास पर नोटिस तामील कराया। बाजपुर में भी मारपीट हो गई दाज्यू। शादी समारोह के दौरान व्यापार मण्डल अध्यक्ष के पुत्र गणेश राय खुल्लर के पुत्र अरुण से मारपीट कर दी।

दून मेडिकल कालेज में रैगिंग ममाले में कालेज प्रशासन ने 2023-24 बैच के नौ छात्रों को दोषी पाते हुए हास्टल व कक्षाओं से निलम्बित कर दिया। इसमं से दो छात्रों को निष्कासित करने के साथ ही 50-50 हजार का जुर्माना लगाया गया है। उधर पुरोला में पूर्व विधायक मालचन्द ने कह रहे हैं- 'पंचायत चुनाव से लेकर अब तक पुरोला प्रमुख नितिशा शाह के जाति प्रमाण पत्र सहित सभी दस्तावेजों की सक्षम अधिकारियों ने कई बार जांच कर ली है। फिर भी प्रमुख (बहू) और मुझे प्रताड़ित किया जा रहा है।'

-तुम्हारा भुली झकरुवा

संघर्ष ने बनाया.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

नहीं मिला और वे बहिष्कृत जैसी थी। इतरा के शूद्र होने और क्या प्रमाण चाहिए? महिदास के नाम में दास का प्रयोग इस महाविद्वान के शूद्र होने का अकाट्य प्रमाण है। सबसे बड़ी बात यह है कि हारीत का वंशज होने के बावजूद विद्रोह या स्वाभिमान में महिदास ने माँ इतरा के साथ अपना नाम जोड़कर खुद को महिदास हारीत के बजाए महिदास ऐतरेय कहा।

ये सूचनाएँ तो समान रूप से उपलब्ध हैं। शेष कहानी दो तरह से मिलती है। स्कन्द पुराण कहता है कि महिदास बचपन से ही विष्णु के मन्त्र का जाप करने में लीन रहते और इसी कारण उनके पिता माण्डूकि ने उन्हें बेकार का आदमी मानकर अपमानित करना शुरू कर दिया, जबकि वह दूसरी पत्नियों से उत्पन्न अपने बच्चों को खूब महत्व दिया करता। इसी कारण महिदास की माँ अपने बेटे से खिन्न रहा करती। पर महिदास ने विष्णु की इतनी उत्कट भक्ति की और माँ को संसार में व्यर्थता का इस कदर विद्वत्ता से भरा उपदेश दिया वहीं स्कन्द पुराण 1.2.42 कि माँ का नजरियाँ ही बदल गया। फिर विष्णु की कृपा से उसे ब्रह्मग्रन्थ की उपलब्धि हुई। सायण के मुताबिक माण्डूकि ने एक बार एक यज्ञ में महिदास को जमीन पर बिठा दिया, जबकि अपने दूसरे पुत्रों को गोद में जगह दी। इससे इतरा फूट फूट कर रोने लगी और उसने पृथ्वी से फट जाने की प्रार्थना की। पृथ्वी तो फटी, पर उसमें से एक दिव्य सिंहासन निकला, जिस पर पृथ्वी ने महिदास को बिठाया और एक ब्राह्मणग्रन्थ का प्रसाद उन्हें दिया।

कथाएँ बेशक अलग-अलग हों, लेकिन दोनों का सन्देश समान है। महिदास की माँ की पति के हाथों अवमानना, खुद महिदास की पिता के हाथों घोर उपेक्षा, महिदास का संकल्प और संघर्ष और उसमें माँ की सक्रिय भूमिका, उसी संघर्ष नामक तपस्या में से एक ब्राह्मणग्रन्थ का लिखा जाना ये सब मिलाकर जो तस्वीर इस विपुल संघर्षशील महाविद्वान महिदास ऐतरेय की बनती है, उसी में से जवाब इन सवालों का मिलता है कि महिदास कौन थे, क्यों उन्होंने माँ के नाम से खुद को प्रसिद्ध किया और कैसे उन्होंने ऐतरेय ब्राह्मण लिखा। बात यहीं तक खत्म नहीं होती। महिदास इतने महत्वाकांक्षी थे कि वे शायद भारत से बाहर ईरान अपने विचारों का प्रचार करने गये होंगे। अवेस्ता में यज्ञ करने वाले पुरोहितों को एथ्रेय भी कहा जाता है और जाहिर है कि मित्र को मिथ्र कहने वाली अवेस्ता की भाषा में एथ्रेय शब्द ऐतरेय का ही परिवर्तित रूप है।

ऐतरेय ब्राह्मण में वह सब कुछ है जो दूसरे ब्राह्मणग्रन्थों में है। बल्कि यूँ कहना ज्यादा ठीक रहेगा कि ऐतरेय ने जो परम्परा डाली, उसी के बाद के ब्राह्मणग्रन्थों में शतपथ ब्राह्मण में भी, अनुकरण किया गया। वही यज्ञों की व्याख्या, रहस्यपूर्ण भी और सामान्य तरीके से भी। वहीं अध्यात्म। वही लौकिक संस्कृत। वही खास तरह की शैली जिसमें वै, ह, हि, नु, खलु, एतत् का खूब प्रयोग किया गया है। पर महिदास शूद्र थे ना? सताए हुए और संघर्ष में से तप कर उभरे हुए। इसलिए उन्होंने उन चरित्रों के तनरूपण में खास मजा लिया है, जो शूद्र थे या सताए हुए थे। अचरज नहीं कि महिदास ने कवष ऐलूष और उनके वंशज तुर कावषेय का वर्णन अपनी महा किताब में किया है। शुन:शेष थे तो ब्राह्मण, अजीगर्त ब्राह्मण के पुत्र। लेकिन जिस बेदर्दी से पिता ने पुत्र शुन:शेप को यज्ञ में बलि के लिए पेश कर दिया, वह शुन:शेप को महिदास के संघर्षप्रिय मानस का सहज नायक बना देता है।

तो कहाँ के थे महापुरुष महिदास? जैसे पहला मन्त्र देश के उत्तर पश्चिम में नहीं पूरब में लिखा गया था, वैसे ही पहला ब्राह्मण भी, यानी ऐतरेय ब्राह्मण भी भारत के उत्तर-पश्चिम में नहीं, मध्य भारत में लिखा गया गया था। कैसे पता चला? ऐसे कि ऐतरेय ब्राहमण (8.14) में महिदास ने मध्यभारत की तारीफ की है कि वह बहुत ही प्रतिष्ठित इलाका है, जहाँ कोई गड़बड़ नहीं होती-ध्रुवायां मध्यमाया प्रतिष्ठायां दिशि। भाषा वैज्ञानिक कहते हैं कि महिदास मध्यभारत के उस हिस्से में हुए, जो महाराष्ट्र से सटा था, क्योंकि वे ल के स्थान पर ड् का प्रयोग करते हैं, जो महाराष्ट्र की खासियत है। क्या महिदास के बारे में जानकार अपको अच्छा नहीं लगा? लगा ही होगा।

(साभार नवभारत टाइम्स)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

प्रेरक कहानी कुत्ता व बिल्ली की आत्मीयता

जगदीश सिंह बृजवाल

अकसर 'कुत्ता और बिल्ली' की आत्मीयता की कहानियाँ आप लोगों ने पढ़ी भी होंगी। दोनों एक दूसरे के विपरीतार्थक, प्रतिद्वन्द्वी जानवर होने के बावजूद भी कभी-कभी उनके बीच गहरी दोस्ती देखने को भी मिल जाती हैं, जो इस लेख में उद्धृत हैं. जहाँ कुत्ता अपनी बफादारी दिखाता है तो बिल्ली अपनी आकर्षक, चंचलता, चपलता से 'मालिक' के प्रिय बन चुके हैं।

वास्तु-शास्त्र के अनुसार घर पर बिल्ली का होना लक्ष्मी का प्रवेश, धन-धान्य से परिपूर्णता, सम्पन्नता का द्योतक माना जाता है, तो कुछ अवगुण भी 'राहू' से सम्बन्ध जोड़ा जाता है किन्तु अधिकतर लोग शुभ ही मानते हैं। कुत्ता बफादारी, घर की सुरक्षा करता है (अशुभ लक्षण मांसाहारी जानवर होना है।

यद्यपि 'कुत्ता व बिल्ली' दोनों स्वभाव से अलग -अलग प्रवृत्ति के हैं, एक दूसरे को 'फूटी आँख नहीं सुहाते' हैं परन्तु जब परिस्थितियां साथ में रहने की बनती है तो उनके अन्दर की सम्वेदनशीलता जाग जाती है। आपसी प्रेम, सहिष्णुता, सद्भाव आ जाती है। जिसके विषय में कुछ अंश को प्रस्तुत करते हैं-

एक परिवार में 'कुत्ता व बिल्ली' के बच्चे 'पिल्ला व किटन' साथ-साथ पल-बढ़ रहे थे। मालिक उनको खूब प्यार दुलार के साथ रखता था। दोनों का हर तरह से अच्छा ख्याल रक्खा जाता था। दोनों दिन भर उछलते-कूदते, खेलते, मदमस्त होकर जीवन व्यतीत करते हैं तथा खेलते-खेलते दोनों सह और मात का खेल भी खेलने लगते। उनके लिए मालिक ने अलग कमरे की व्यवस्था किया था, कभी-कभी वे मालिक के साथ चहल कदमी भी करते थे।

दोनों में समय के अनुसार बदलाव आना, साथ ही बढ़ते जा रहे थे, उनमें समझ विकसित होने लगी. दोनों अपनी प्रवृत्ति अनुसार, कुत्ता- भौं-भौं करने लगा तो बिल्ली- म्याऊं -म्याऊं। अभी भी समझ नहीं पा रहे थे कि वे अलग जाति -बिरादरी से ताल्लुक रखते भी हैं। कुत्ता भौं-भौं कर घर आंगन, छत पर स्वतंत्रता पूर्वक घूमाता है तो बिल्ली लुका छिपी करते इधर-उधर घुमती रहती थी। पर कुत्ता बिल्ली के इस तरह के व्यवहार को समझ नहीं पा रहा था, उसने बिल्ली बहन से पूछना चाहा (आखिर पूछ ही लिया गया)

कुत्ता- बहन बिल्ली, 'मैं आपसे एक बात पुछना चाहता हूँ, क्या पुछ सकता हूँ?'

बिल्ली- अरे भैया! बेशक पूछिए, 'इसमें कोई बात नहीं है।'

कुत्ता- बहन, 'मैं अकसर देखता हूँ कि तुम चोरी-छिपे, छुप-छुप कर चलती हो, बहन ऐसा क्यों? मेरी तरह स्वतंत्र होकर क्यों नहीं टहलते हो।'

बिल्ली- भैया कुत्ता, 'तुम जानते नहीं हो कि मेरा शरीर भी तुम्हारी तरह शक्तिशाली नहीं है, और मैं तेज दौड़ भी नहीं सकती। अन्य गाँव के कुत्ते मेरे जानी दुश्मन जो जान लेने पर उतारू रहते हैं, बच्चे मुझे देखते ही पत्थर से मारने लगते हैं।'

कुत्ता- बहन! 'आपके साथ ऐसा क्यों होता है?'

बिल्ली- भैया कुत्ता, 'हम बिल्ली जाति की शारीरिक बनावट ही कुछ ऐसी है। हम ज्यादा देर तेजी से नहीं दौड़ सकते हैं। ईश्वर ने हमारा स्वभाव भी ऐसा ही बना रक्खा है।

कुत्ता- अच्छा, ऐसा है! बहन, 'तुम्हारा हिफाजत अब मैं करूंगा, फिक्र मत करना।'

बिल्ली- भैया, 'हमेशा मेरे साथ कहाँ तक रह सकते, मुझे अपनी बिरादरी भी निभानी पड़ती है। उनसे भी मिलना पड़ता है। अपने बचाव का उपाय तो सीखना ही पड़ेगा।'

कुत्ता- ठीक है बहन, और भौ-भौं करते आंगन की और चले जाता है।

इसी बीच 'बिलौटा' चुपके, छिप-छिपके अपनी 'बिल्ली रानी ' से मिलने पहुँच जाता है। बिल्ली रानी अपनी यौवन में है। प्रेमी से मिलने को आतुर दिखती है।

बिल्ली- ओह! आइए 'बिलौटा राजा, आखिर चोरी-छिपे पहुँच ही गए।'

बिलौटा- 'कुछ शर्मिन्दगी महसूस करते (बिल्ली रानी आपकी बात मैं समझा नहीं।'

बिल्ली- समझोगे कैसे, 'राजा, सोचता हूँ हमारी जिन्दगी भी शायद चोरी-छिपे ही व्यतीत हो जाती है, स्वतंत्रता शायद हमारे नसीब में है ही नहीं।'

बिलौटा- बिल्ली रानी, 'इसमें कौन क्या कर सकता, जो नसीब में है उसी में खुश रहें। परेशानियां तो सभी प्राणियों के साथ लगा है।'

बिल्ली- राजा, मेरा कुत्ता भैया तो निशिचन्त, बेफिक्र, स्वतंत्र, बेरोकटोक होकर घूमता-फिरता है। उसे कभी हमारी तरह चोरी-छिपे नहीं देखा।'

बिलौटा- अच्छा ! 'अब जाकर कभी अपने बिलौटा भैया को भी पूछ लेना की तुम्हें भी कुछ परेशानियां हैं या नहीं?'

बिल्ली- 'अच्छा ठीक है, अब तुम जाकर रक्खा खाना खाकर निकालो, कहीं मेरी सामत न आ जाए।'

बिलौटा- 'खाना खाकर निकलते हुए, अच्छा रानी, बाय ! शुभ संध्या।'

बिल्ली- 'ठीक है।'

कुत्ता, बिल्ली बहन को आवाज लगाते हुए- बिल्ली बहन... बिल्ली बहन, कहाँ हो।'

बिल्ली- हाँ भैया, 'क्यों आवाज देते हो।'

कुत्ता- बहन, 'तुम अन्दर बहुत देर से क्या कर रहे थे तभी आवाज दे रहा हूँ'

बिल्ली- ओह! ये बात, 'अरे तुम्हारे जीजाजी बिलौटा आया था आपसी बातचीत हो रही थी।'

कुत्ता- अच्छा ! तो जीजा जी से मुलाकात करा देते।

बिल्ली- फिर कभी, भैया 'मैं आज आपसे एक बहुत जरूरी प्रश्न पुछने वाली हूँ, क्या पुछ लूं?'

कुत्ता- बहन पूछ लिजिए! पूछो-'अभी बताए देता हूँ।

बिल्ली- कुत्ता भैया, 'तुम्हें तो हमेशा मैंने बड़े निश्चिन्त, स्वतंत्रतापूर्वक घूमते देखा है, क्या आपके जीवन में कोई दुश्मन तथा कष्ट परेशानियां भी आपके पास है?'

कुत्ता- वाह! अरे बहन, 'क्या बात कर दिया है। हम सिर्फ अपने इलाके में शेर होते हैं। बाहर जाते ही हमारी घीघी बन्द जाती है।'

बिल्ली- 'ऐसा क्यों होता है? सभी तो आपके बिरादरी के कुत्ते तो है।'

कुत्ता- अरे नहीं, बहन 'वे बिरादरी के जरूर है किन्तु वहाँ हमारे पहुँचते मारने पर उतारू, जानी दुश्मन हो जाते हैं। वैसा व्यवहार हमारा भी अपने इलाके में रहता है।'

बिल्ली- अच्छा! तब तो सभी प्राणियों की अपनी अपनी कुछ- न-कुछ परेशानी लगी हैं।'

कुत्ता- हाँ बहन, 'कभी -कभी जंगल से आकर बाघ, भेड़िया भी हमें अपना निवाला बना लेता है।'

बिल्ली- ओह! वास्तव में बिलौटा, राजा की बातें गलत नहीं थी। जो भी प्राणी जीवन धारण करता है तो उसे अपने जीवन्तता के लिए संघर्ष, परेशानियां उठानी ही पड़ती है।

दोनों 'कुत्ता व बिल्ली' अपने को भाग्यशाली समझते तो है (जिन्हें आसानी से रहना-खाना प्राप्त हो जाता है, साथ-साथ रहते दोस्ती का मिसाल कायम करते हैं। दूसरों के लिए प्रेरणादायक कार्य करते हैं। जो लेखक की दृष्टिगत लेखन, जरूर हमें कुछ सीख तो देती है।

ज्योतिष की बातें- 266

3 फरवरी 2026 को बुध समराशि कुम्भ में प्रवेश करेगा, वहाँ पर गुरु की शुभ दृष्टि भी पड़ेगी। अभी तक अस्त चल रहा बुध अगले दिन उदय भी हो जाएगा अत: बुध अत्यन्त बली रहेगा। फलदीपिका के अनुसार बुध दूसरे, चौथे, छठवें, आठवें, दसवें व ग्यारहवें स्थान पर शुभ होता है अत: अगली 67 दिन बुध वाणिज्य व्यवसाय आदि अपने कारक विषयों में मकर, वृश्चिक, कन्या कर्क, वृषभ व मेष राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा।

6 फरवरी 2026 को शुक्र मित्रराशि कुम्भ में प्रवेश करेगा, जहाँ पर गुरु की शुभ दृष्टि भी होगी। इसके पहले शुक्र उदय भी हो चुका है अत: अगले 24 दिन शुक्र सांसारिक सुख आदि अपने कारक विषयों में कुम्भ, मकर, धनु, वृश्चिक, तुला, कर्क, मिथुन, मेष व मीन राशि की जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। अन्य तीन राशियों को भी सामान्य फल प्रदान करेगा। यहाँ पर प्रत्येक ग्रह का अलग-अलग गोचरफल प्रस्तुत किया जाता है। व्यक्तिविशेष के लिए सूक्ष्म विश्लेषण उसकी जन्मकुण्डली, महादशा आदि पर निर्भर करता है ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 155

पालतू पशुओं का अन्तिम संस्कार

आजकल यह देखा जा रहा है कि कुछ पशुप्रेमी अपने पालतू पशुओं का उनकी मृत्यु के बाद, उनके प्रति स्नेह के कारण विधिवत् अन्तिम संस्कार करते हैं, उनको दफनाते हैं। इस पर विचार करना चाहिए क्या यह उचित है? धर्मशास्त्रों में मनुष्यों के अतिरिक्त किसी भी जीव का अन्तिम संस्कार का कोई प्रावधान उपलब्ध नहीं होता है। अन्य पशुओं की मृत्यु होने पर उनके मृत शरीर को जंगल में या सुनसान जगह पर छोड़ दिया जाता है, जहाँ पर गिद्ध आकर अपना भोजन प्राप्त कर सकें क्योंकि परमात्मा ने गिद्धों का भोजन पशुओं का मृत शरीर ही निर्धारित किया है। कुछ सम्प्रदाय भी ऐसे हैं जहाँ पर सन्त की मृत्यु होने पर उसके शरीर को पत्थर बांधकर नदी में डाल दिया जाता है जिससे की मछलियाँ अपना भोजन प्राप्त कर सकें जबकि वे सन्त जीवित रहते सभी के लिए पूजनीय होते हैं।

मृत पशुओं के शरीर के विभिन्न अंगों का उपयोग करना शास्त्रविरुद्ध नहीं है। जंगल में हिरण के सींगों को इकट्ठा करके औषधि मृगशृंगभस्म बनाई जाती है। बाघ के चमड़े से बैठने के लिए आसन बनाया जाता है। मोर जोकि राष्ट्रीय पशु है, के पंखों को घर में रखना अत्यन्त शुभ माना जाता है। इन कार्यों से बाघ, हिरण या मोर का अपमान नहीं होता है लेकिन पशुओं के अंगों को प्राप्त करने के लिए उन पशुओं की हत्या करना, यह पाप है। गाय, बैल आदि पशुओं की भी मृत्यु होने पर उनके दांत, सींग चमड़ा आदि विभिन्न अंगों का उपयोग करना अनुचित नहीं है। ऐसा करने से गाय आदि का अपमान नहीं होता है।

हो सकता है, मेरी इस बात से अधिकांश लोग सहमत न हों लेकिन किसी भी पालतू पशु का अन्तिम संस्कार करना मूर्खतापूर्ण कार्य है बल्कि उसके मृत शरीर को अन्य जीवों का भोजन बनने देना चाहिए।

-ओंकार नाथ कोष्टा

पिघलता हिमालय
सीधी और सपाट बात। अपनों का साथ।
आइए, इस इस अभियान में सहयोगी बनें।

हिमालय पर कम बर्फबारी से नदियों पर मंडरा रहे संकट के बादल

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

हिमालय को यूं ही एशिया का 'वॉटर टावर' नहीं कहा जाता। यहीं से गंगा, सिन्धु और ब्रह्मपुत्र जैसी जीवनरेखाएं जन्म लेती हैं। अफगानिस्तान से लेकर उत्तरी पाकिस्तान और ताजिकिस्तान तक फैली लगभग 800 किलोमीटर लम्बी हिन्दू-कुश पर्वत श्रृंखला आज एक अनकही कहानी सुना रही है। इन पहाड़ों में बसे हजारों ग्लेशियर अब धीमे-धीमे पिघल रहे हैं, जैसे समय खुद उनसे जीवन छीन रहा हो। अगर ये बर्फ यूं ही विदा लेती रही, तो सवाल सिर्फ पहाड़ों का नहीं रहेगा। सवाल हमारी नदियों, हमारी खेती, हमारे भविष्य का होगा। हिमालय आज भी खड़ा है, मगर उसकी

सफेदी कम हो रही है। और जब पहाड़ चुप हो जाते हैं, तो समझिए प्रकृति कुछ बहुत बड़ा कहने वाली है। इन्हीं नदियों से मैदानों में हरियाली, शहरों में पानी और सभ्यताओं में निरन्तरता बनी रहती है। लेकिन जब पहाड़ों पर बर्फ कम पड़ेगी, तो नदियों की धार भी कमजोर पड़ेगी। पहले बाढ़ का खतरा, फिर सूखे का साया और अन्त में संघर्ष। जब हिमालय की चोटियों को छूता था, तो बर्फ ऐसे चमकती थी जैसे धरती ने आकाश का एक टुकड़ा ओढ़ लिया हो। हवा में ठण्डक नहीं, एक वादा होता था कि नदियां बहेंगी, खेत हरे रहेंगे और जीवन चलता रहेगा। लेकिन अब उस सफेद चादर में जगह-जगह दरारें हैं। धरती का तापमान बढ़ चुका है। जलवायु परिवर्तन अब कोई भविष्य की कहानी नहीं, बल्कि आज की कड़वी सच्चाई है। देर से आती सर्दियां, पहाड़ों से चुपचाप खिसकती बर्फ और समुद्र का उठता पानी, ये सब प्रकृति की वो चेतावनियां हैं, जिन्हें अनसुना करना अब नामुमकिन हो गया है। कभी जलवायु परिवर्तन से सम्बन्धित अन्तर-सरकारी पैनल ने चेताया था कि अगर धरती का तापमान यूं ही बढ़ता रहा, तो बर्फबारी का मौसम छोटा होता जाएगा। ऊँचाइयों पर बर्फ कम समय ठहरेगी और वो चोटियां, जिन्हें हम सदियों से सफेद देखते आए हैं, धीरे-धीरे पथरीली नजर आने लगेंगी। आज वही भविष्य वर्तमान बनकर सामने खड़ा है। जलवायु परिवर्तन दुनिया की वो हकीकत बन चुकी है, जिससे मुँह फेरना नामुमकिन है। धरती के बढ़ते तापमान का असर मौसम पर साफ देखने को मिल रहा है। देर से दस्तक देती ठण्ड, पहाड़ों पर पिघलती बर्फ और समुद्र का बढ़ता जलस्तर चीख-चीख कर आने वाली आपदा के संकेत दे रहे हैं। इसी बीच हिन्दू- कुश हिमायलय का चौंकाने वाला डेटा सामने आया है, जिसने क्लाइमेट चेंज पर एक बार फिर मुहर लगा दी है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

गोरखा नगर में बनेगा अम्बेडकर भवन

लोहाघाट। गोरखानगर में प्रस्तावित डॉ. भीमराव अम्बेडकर भवन निर्माण की स्वीकृति मिल चुकी है। 2.84 करोड़ रुपये की राशि से बनने वाले भवन की पहली किस्त के रूप में 1.14 करोड़ रुपये जारी हो चुके हैं। सीएम कार्यालय के नोडल अधिकारी केदार बृजवाल ने निर्माण स्थल पर जाकर निरीक्षण किया।

ले.कर्नल रौतेला जिलाध्यक्ष

रामनगर। रि.ले.कर्नल बी.एस.रौतेला लगातार तीसरी बार उत्तराखण्ड पूर्व सैनिक लीग जिला नैनीताल के जिलाध्यक्ष बने हैं। बताते चलें कि ले.कर्नल रौतेला सेवा निवृत्ति के बाद करीब 2 वर्ष से अधिक समय तक सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। हाल ही में उन्हें थल सेनाध्यक्ष जनरल उपेन्द्र द्विवेदी ने सम्मानित किया था।

बुक्सा जनजाति समुदाय के 216 गांवों में मूलभूत सुविधाओं के लिये नोटिस

देहरादून। राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा नोटिस जारी करते हुए विशेष रूप से कमजोर जनजाति समुदाय बुक्सा के 216 गावों में रहने वाले लोगों की मूलभूत सुविधाओं पर आवश्यक कार्रवाई को कहा है।

आयोग ने समाजसेवी गंगा पांगती द्वारा भेजी गई याचिका को देखते हुए इस मामले में जांच करने का निर्णय लिया और जिला मजिस्ट्रेटों से अनुरोध किया है कि वे इस मामले में कार्रवाई करते हुए 15 दिनों के भीतर आयोग को रिपोर्ट दें। यह नोटिस राज्य के देहरादून, हरिद्वार, पौड़ी, उधमसिंह नगर और नैनीताल में भेजा गया है।

उल्लेखनीय है कि प्रदेश की जनजातियों में बुक्सा समुदाय सबसे कमजोर स्थिति में पाया गया। पूर्व असि.कमिश्नर अशोक गर्ब्याल हमेशा से समाज सुधार के कार्यों में रत रहते हुए बुक्सा जनजाति के लिये मददगार रहे हैं। उनके प्रसास से देहरादून से लेकर रामनगर तक इस समुदाय में काफी चेतना आई लेकिन अभी भी स्थितियां जटिल बनी हुई हैं।

58 हेक्टेयर वनभूमि अतिक्रमण मुक्त

रामनगर। तराई पश्चिमी वन प्रभाग के रामनगर रेंज के अन्तर्गत जुड़का बीट में वन कर्मियों ने 58 हेक्टेयर वन भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराने में सफलता प्राप्त की। डीएफओ प्रकाश चन्द्र आर्या ने बताया कि इस क्षेत्र में अवैध रूप से कृषि कार्य किया जा रहा था। अब तारबाड़ करा दी गई है।

केदारनाथ यात्रा तैयारियां प्रारम्भ

रुद्रप्रयाग। आगामी केदारनाथ यात्रा के सफल संचालन के दृष्टिगत जिला प्रशासन द्वारा तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। डीएम प्रतीक जैन की अध्यक्षता में सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों एवं जन प्रतिनिधियों के साथ महत्वपूर्ण समन्वय एवं समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में आवश्यक व्यवस्थाओं, विभागीय दायित्वों, हक-हकूकदारों द्वारा दिये गये सुझावों पर विचार-विमर्श किया गया।

फिर टल गए छावनी बोर्डों के चुनाव

रानीखेत। रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार जिन छावनी बोर्डों का कार्यकाल 10 फरवरी 2026 को समाप्त हो रहा है, उनका कार्यकाल एक वर्ष अथवा नए बोर्डों के गठन तक बढ़ा दिया गया है।

ऐसे में छावनी बोर्डों के चुनाव एक बार फिर फिर टल गए हैं। ज्ञातव्य है कि रानीखेत सहित देश के कुल 56 छावनी बोर्डों का कार्यकला 10 फरवरी 2026 को समाप्त होना है। ऐसे में रक्षा मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि इन बोर्डों का कार्यकाला एक वर्ष या फिर तब तक बढ़ाया जाएगा, जकब तक कि छावनी बोर्डों का गठन सम्बन्धित अधिनियम की धारा 12 के तहत नहीं कर लिया जाता। बताते चलें कि लम्बे समय से छावनी बोर्डों के भंग होने के बाद प्रशासनिक व्यवस्था कमाण्ड अथॉरिटी के अधीन संचालित हो रही है। चुनावों में लगातार हो रही देरी और प्रशासनिक बदलावों का प्रभाव भी है।

सड़क चौड़ीकरण को भवनों पर चला बुलडोजर

हल्द्वानी। जिला प्रशासन ने काठगोदाम में सड़क चौड़ीकरण की जद में आ रहे अतिक्रमण को ध्वस्त किया। काठगोदाम तिराहे से गौला पुल तक सड़क चौड़ीकरण प्रस्तावित है। इसमें 4 करोड़ की लागत से लगभग 250 मीटर तक सड़क के बीचोंबीच से दोनों ओर 12-12 मीटर चौड़ीकरण किया जा रहा है। इसमें ड्रेनेज सिस्टम, लाइटिंग के साथ ही मीडियन बनाई जाएगी। इसके लिये प्रशासन, लोनिवि, नगर निगम की संयुक्त टीम ने सर्वे किया जिसमें अधिकांश भवन नजूल भूमि, रेलवे भूमि पर बने थे। इन्हें नोटस जारी करने के बाद हटाने की कार्रवाई की गई। सिटी मजिस्ट्रेट ने कहा है कि मानकों के अनुरूप सड़क चौड़ीकरण का कार्य हो रहा है। जो भी इसकी जद में आएगा उस अवैध निर्माण को हटाया जाएगा।

परिक्रमा

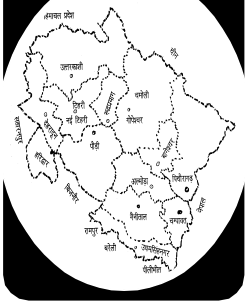

नानकमत्ता गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी में फिर विवाद

नानकमत्ता। गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी में एक बार फिर विवाद की स्थिति उत्पन्न हो गई है। कमेटी के महासचिव ने कमेटी के 14 डॉयरेक्टरों को नोटिस देकर मीटिंग में न आने का हवाला देते हुए स्पष्टीकरण मांगा है। नोटिस से भड़के डॉयरेक्टरों ने जिलाधिकारी को सम्बोधित ज्ञापन में उपनिबन्धक रजिस्ट्रार को देकर प्रकरण की जांच कर निस्तारण करने का मुद्दा उठाया। आगाह किया कि यदि प्रशासन ने कोई कार्रवाई नहीं की तो सीएम से मुलाकात कर मुद्दा उठाया जाएगा। कहा कि प्रबन्धक कमेटी में 24 में से 14 निर्वाचित डॉयरेक्टर हैं लेकिन महासचिव संविधान के खिलाफ जाकर डॉयरेक्टर की सदस्यता रद्द करने की साजिश रचते रहते हैं। इसीलिए उन्होंने 15 जनवरी को 14 डायरेक्टरों पर बैठक में नहीं आने का आरोप लगाया है।

गैरसैंण में पेश होगा पांचवा बजट

देहरादून। प्रदेश सरकार अपना पांचवा और वर्ष 2025-26 का वार्षिक बजट गैरसैंण में पेश करेगी। माना जा रहा है कि बजट का आकार 1.10 लाख करोड़ रुपये से अधिक का होगा। सीएम धामी ने संकेत दिये हैं कि सरकार गतवर्ष भी बजट सत्र गैरसैंण में करना चाहती थी, उस समय विधानसभा भवन मरम्मत व अन्य कार्य जारी थे, जिससे सत्र नहीं हो सका। इस बार सभी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं।

मदकोट-तोमिक सड़क बदहाल

मदकोट। दो वर्ष पूर्व बनी मदकोट-तोमिक सड़क के बदहाल होने से ग्रामीणों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। वर्ष 2024 में बनी 27 किमी लम्बी इस सड़क पर जगह-जगह डामर उखड़ चुका है। इससे वल्थी, राप्ती, पत्थरकोट, तोमिक के ग्रामीणों ने दुर्घटना की आशंका जताई है। ग्रामीणों ने मानसून काल से हले सड़क ठीक करने की मांग की है। मार्च 2024 में सड़क पूरी हो गई थी लेकिन दो वर्ष के दौरान कई जगहों पर क्षतिग्रस्त हो चुकी है।

सितारगंज-टनकपुर फोरलेन की तैयारी

खटीमा। सितारगंज से टनकपुर को जोड़ने वाले लगभग 52 किमी नेशनल हाईवे को फोरलेन बनाने की तैयारी है, इससे खटीमा तहसील के 26 ग्राम प्रभावित होने तय हैं।

जिलाधिकारी नितिन भदोरिया के निर्देशन में इन ग्रामों की जमीनों की खरीद फरोख्त, रजिस्ट्री बैनामे और भूमि की प्रकृति में परिवर्तन करने पर रोक लगा दी गई है। तहसीलदार वीरेन्द्र सिंह सजवाण द्वारा शासन के आदेशानुसार राजस्व निरीक्षक तहसीलदार खटीमा बिगराबाग को 26 ग्रामों की सूची जारी कर अनुपालन के निर्देश दिये गये हैं। डीपीआर हवाला देते हुए खरीद फरोख्त के लिये प्रतिबन्धित ग्रामों में चौड़ीकरण कार्य की चर्चा है। एनएच से लगे ग्रामों में जरायु प्रतापपुर, सड़ासड़िया, पहेनिया, सुजिया, महोलिया, उमरुकला, नदन्ना, बिल्हैरी चकरपुर, गौहर पटिया, दोगाड़ी रेंज आदि शामिल हैं।

डा.पांगती को सीएमओ का चार्ज

अल्मोड़ा। मुख्य चिकित्साधिकारी डा. नवीन चन्द्र तिवारी के स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के बाद सीएमओ का चार्ज डा. अरविन्द पाण्डे को मिला है। डा. तिवारी ने जून माह में पदभार ग्रहण किया था, तब से सीएमओ स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लिये प्रयासरत रहे लेकिन चुनौतियां बढ़ती रहीं। चौखुटिया में चले आरपेशन स्वास्थ्य से तनाव ज्यादा रहा। ऐसे में उन्होंने बीआरएस के लिये आवेदन कर दिया था। इसे उन्होंने अपने स्वास्थ्य कारण बताया।

राजजात यात्रा स्थगित करने पर गुस्सा

अल्मोड़ा। नन्दा देवी मन्दिर परिसर में नन्दा देवी मन्दिर समिमि की बैठक में नन्दा राजजात यात्रा 2026 को स्थगित करने के निर्णय को कुमाऊं की उपेक्षा बताया। यात्रा को स्थगित करने पर उपस्थित जनों ने गुस्सा जताया।

नन्दा देवी मन्दिर कमेटी की ओर से हुई बैठक में वक्तओं ने कहा कि नन्दा राजजात के सम्बन्ध में कुमाऊं नन्दा राजजात अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों को राजजात नौटी गढ़वाल के अध्यक्ष कुंवर राकेश पंवार एवं महामंत्री भुवन नौटियाल की ओर से बिना कुमाऊं नन्दा राजजात समिति को विश्वास में लिए एवं वार्ता किए बगैर यात्रा को स्थगित कर दिया गया। 75 वर्ष बाद सन् 2000 में मानव संसाधन विकास मंत्री मुरली मनोहर जोशी एवं गढ़वाल पंवार वंशज कुंवर बलवन्त सिंह के आग्रह पर कुमाऊं ने इसमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित की लेकिन अब बिना पूछे फरमान जारी हुआ है।

कलसिया पर बनेगा नया वैली ब्रिज

हल्द्वानी। जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल की अध्यक्षता में हुई बैठक में कुमाऊं के पहाड़ी जिलों को जोड़ने वाली प्रमुख सड़क में लगातार बढ़ते दबाव को देखते हुए कलसिया नाले में नया वैली ब्रिज बनाने की बात हुई। वर्तमान में 32 टन भार क्षमता के वैली ब्रिज के स्थान पर अधिक भार क्षमता का वैली ब्रिज का निर्माण और वैकल्पिक मार्ग पर भी चर्चा हुई ताकि निर्माण के दौरान यातायात व्यवस्था भी बनी रहे।

किताब व ड्रेस पर परेशानी नहीं होगी

हल्द्वानी। जिला प्रशान ने नए शैक्षणिक सत्र से पूर्व निजी स्कूलों व कारोबारियों की मनमानी रोकने के लिये शिक्षा विभाग व प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बैठक की। डीएम ललित मोहन रयाल ने कहा कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के तहत शिक्षा एक परोपकारी गतिविधि है, इसे लाभ कमाने का साधन नहीं बनाया जा सकता है। न्यायालयों के भी स्पष्ट निर्देश हैं कि विद्यालय किसी एक दुकान अथवा प्रकाशन से पुस्तक या ड्रेस खरीदने के लिये बाध्य नहीं कर सकते। ऐसी बाध्यता अनुचित व्यापार व्यवहार की श्रेणी में आता है।

डीएम रयाल ने कहा कि शासन में प्रचलित शासनादेशों के प्रावधान में निर्देश हैं कि एनसीईआरटी/एससीईआरटी पुस्तकों को प्राथमिकता दी जाए। फीस वृद्धि पारदर्शी औचित्यपूर्ण एवं अभिभावकों से सम्वाद के उपरान्त ही की जाए। एडमिशन के समय छात्र-छात्राओं की आयु का ध्यान विशेष रूप से रखा जाए। उन्होंने मुख्य शिक्षा अधिकारी को इसके लिये निर्देश भी जारी किए।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उत्तराखण्ड शासन

संकल्प से शिखर तक

गणतंत्र दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएँ

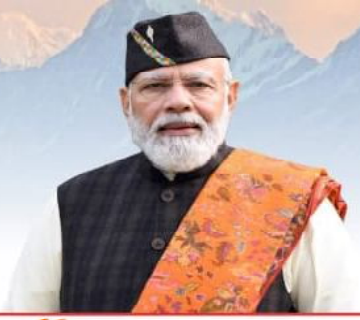

26 जनवरी

"माननीय प्रधानमंत्री जी ने 21वीं सदी के तीसरे दशक को उत्तराखण्ड का दशक कहा है। हम प्रधानमंत्री जी के विजन के अनुरूप राज्य को हर क्षेत्र में आदर्श राज्य बनाने के लिये विकल्प रहित संकल्प के साथ काम कर रहे हैं।"

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

"21वीं सदी के विकसित भारत के निर्माण के दो प्रमुख स्तंभ हैं। पहला, अपनी विरासत पर गर्व और दूसरा, विकास के लिए हर संभव प्रयास। आज उत्तराखण्ड, इन दोनों ही स्तंभों को लगातार मजबूत कर रहा है। ये दशक उत्तराखण्ड का दशक है।"

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

संकल्प नये उत्तराखण्ड का

- स्वतंत्र भारत के इतिहास में समान नागरिक संहिता लागू करने वाला देश में प्रथम राज्य बना उत्तराखण्ड।
- नीति आयोग द्वारा जारी नियति तैयारी सूचकांक (Export Preparedness Index – EPI) 2024 में उत्तराखंड ने छोटे राज्यों की श्रेणी में प्रथम स्थान किया प्राप्त।
- बीते 4 वर्षों में 26,500 से अधिक युवाओं को मिली सरकारी नौकरी।
- उत्तराखंड अल्पसंख्यक शिक्षा विधेयक, 2025 को मिली मंजूरी। प्रदेश में संचालित मदरसों को अब उत्तराखंड अल्पसंख्यक शिक्षा प्राधिकरण से लेनी होगी मान्यता।
- राज्य में 10 हजार एकड़ से अधिक सरकारी भूमि हुई अतिक्रमण से मुक्त।
- राज्य के इतिहास में पहली बार 1 लाख करोड़ से अधिक का बजट।
- ग्लोबल इन्वेस्टर समिट में ₹ 3.56 लाख करोड़ के एम.ओ.यू. हुए साईन। इस वर्ष तक ₹ 1 लाख करोड़ से अधिक के निवेश की हो चुकी ग्राउंडिंग।
- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत उद्योग संवर्धन एवं आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT) द्वारा जारी States' Startup Ecosystem Ranking (5वां संस्करण) में उत्तराखण्ड को मजबूत स्टार्टअप इकोसिस्टम विकसित करने में 'लीडर' के रूप में मिली मान्यता
- राज्य आंदोलनकारियों के लिए सरकारी नौकरियों में 10 प्रतिशत क्षैतिज आरक्षण हुआ लागू।
- राज्य में सशक्त भू कानून हुआ लागू।
- राज्य में सख्त धर्मान्तरण विरोधी कानून, सख्त नकल विरोधी कानून, एवं दंगारोधी कानून हुआ लागू।
- राज्य में कुल 58 लाख से अधिक आयुष्मान कार्ड किए गए वितरित।
- उधम सिंह नगर के किच्छा में एम्स की सेटलाइट सेंटर का निर्माण कार्य गतिमान।
- राज्य में महिलाओं के लिए सरकारी नौकरियों में 30 प्रतिशत क्षैतिज आरक्षण हुआ लागू। सहकारी प्रबंध समितियों में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित।
- शहीद सैनिकों के आश्रितों को मिलने वाली अनुग्रह राशि को ₹ 10 लाख से बढ़ाकर किया ₹50 लाख। परमवीर चक्र विजेताओं की अनुग्रह राशि ₹50 लाख से बढ़ाकर की गई डेढ़ करोड़।
- केदारनाथ पुनर्निर्माण और बदरीनाथ धाम में मास्टर प्लान के तहत कार्य गतिमान। मानसखंड मंदिर माला मिशन के तहत पौराणिक मंदिर के पुनर्निर्माण का कार्य जारी।
- गौरीकुण्ड से केदारनाथ एवं गोविन्दघाट से हेमकुण्ड साहिब तक रोपवे निर्माण कार्य का हुआ शिलान्यास।
- दिल्ली देहरादून के बीच एलिवेटेड रोड के बनने से 2.5 घंटे में सफर होगा पूरा।
- ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल लाइन का कार्य तेज गति से गतिमान। अब तक 70 प्रतिशत कार्य हुआ पूरा।
- नीति आयोग द्वारा जारी सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) इंडेक्स में उत्तराखंड को मिला देश में प्रथम स्थान।
- छद्म भेषधारियों के खिलाफ ऑपरेशन कालनेमि की हुई शुरूवात।
- खनन सुधारों में उत्तराखण्ड का उत्कृष्ट प्रदर्शन, देश में हासिल किया दूसरा स्थान, केंद्र सरकार ने जारी की ₹200 करोड़ की प्रोत्साहन राशि।
- उत्तराखंड ने 38वें राष्ट्रीय खेलों का किया सफल आयोजन, कुल 103 पदक जीतकर, पदक तालिका में 7वां स्थान किया हासिल।
- राज्य के स्कूलों में बच्चों के पाठ्यचर्या में शामिल होगा श्रीमद् भगवत गीता का अध्ययन
- उद्योगों को बढ़ावा देने के लिये मेगा इण्डस्ट्रियल एवं इन्वेस्टमेंट नीति-2025 मंजूरी

विकास के नये अध्याय की ओर अग्रसर

देवभूमि उत्तराखण्ड

प्रधानमंत्री जी के नौ आग्रह

स्थानीय लोगों से:

बोली भाषा का संरक्षण, एक पेड़ मां के नाम, स्वच्छ जल, गांव से जुड़ाव, तिबारी वाले घरों को संवारें

पर्यटकों से:

सिंगल यूज प्लास्टिक से बचें, वोकल फॉर लोकल, यातायात के नियम अपनाएं, तीर्थों की मर्यादा का पालन करें

सूचना एवं लोक संपर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी।

www.uttarainformation.gov.in uttarakhandDIPR DIPR_UK uttarakhand DIPR

@DIPR_UK #ExploreUttarakhand

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

स्मृतियां शेष

रंगकर्मी जगदीश चन्द्र जोशी शिक्षक होने के साथ ही समाज में साधक की भूमिका में रहे

अल्मोड़ा। रैमजे इण्टर कालेज के पूर्व शिक्षक एवं वरिष्ठ रंगकर्मी जगदीश चन्द्र जोशी का विगत दिवस निधन हो गया। एक शिक्षक के रूप में वह जितना युवाओं को प्रेरित करने वाले थे उतना ही समाज के प्रति जागरूक भी। उनकी विनम्रता और सादगी थी ही ऐसी कि वह समाज में हमेशा साधक की भूमिका में रहे। उन्हें कभी किसी बात का गरूर नहीं था कि वे सांस्कृतिक नगरी के विशिष्ट परिवार से हैं। अपने शिक्षण जीवन की शुरुआत राजकीय इण्टर कालेज अल्मोड़ा से करने के पश्चात वह रैमजे इण्टर कालेज में अर्थशास्त्र प्रवक्ता के रूप में कार्यरत रहे। अल्मोड़ा की रामीलीलाओं में मेकअप विशेषज्ञ के रूप में पहचान के साथ ही हमेशा रंगमंच से जुड़े रहे। लोक कलाकार संघ व रंगकर्मी मोहन उप्रेती से उनका गहरा लगाव था। कलाकारों की संगत और बांसुरी वादन वह रमे रहते।

रानीधारा में रहते हुए उन्होंने लगातार शहर के लोक पक्ष को संवारने में भूमिका निभाई। वरिष्ठ अधिवक्ता स्व. चन्द्रशेखर जोशी उनके बड़ी भाई थे। जबकि पूर्व जिला सूचना अधिकारी दीपक जोशी उनके छोटे भाई हैं।

पिघलता हिमालय के सक्रिय सदस्यों में शामिल जोशी जी वर्ष में नियमित रूप से हल्द्वानी आते थे और अपनी ससुराल पन्त परिवार के अलावा 'शक्ति प्रेस' पिघलता हिमालय उनका मुख्य अड्डा था जहां सामाजिक विषयों को लेकर उनका चिन्तन होता। पिघलता हिमालय परिवार अपने वरिष्ठ साथी स्व. जगदीश जोशी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

समाजसेवी भुवन चन्द्र जोशी अपनी संस्कृति के साथ लोगों को जोड़ने वाले थे

हल्द्वानी/रानीखेत। विद्युत विभाग से सेवानिवृत्त एवं अग्रणीय समाज सेवी भुवन चन्द्र जोशी का विगत दिवस निधन हो गया। अपनी सरकारी सेवा में ईमानदार और हठी जोशी जी का लगाव समाज के हाशिये पर खड़े लोगों के साथ था। वह अपनी संस्कृति के साथ लोगों को जोड़ने वाले थे।

हाड़तोड़ मेहनत करने के साथ ही वह कर्म पर विश्वास करते थे। उन्होंने कभी भी अपने कष्टों को उजागर नहीं किया बल्कि समाज को जागरूक करने की दिशा में सतर्क रहे। रानीखेत उपमण्डल में अपनी सरकारी सेवा के दौरान वह दूरस्थ इलाकों तक लोगों से जुड़े थे और हरसम्भव मदद के लिये तत्पर रहते। सन्त सन्यासियों में उनकी आस्था थी और वह मदद के लिये अपने पूरे परिवार को शामिल करते। रानीखेत क्षेत्र के बूबू धाम मन्दिर में उन्होंने लगातार सेवा की और धूनी में रमे साधुओं तक को संरक्षण देने में हमेशा आगे रहे। संगीत के प्रति विशेष अनुराग होने से उन्होंने अपने पुत्र-पुत्रियों शंकर जोशी, हेमा व दीप्ति को संगीत के क्षेत्र में विधिवत शिक्षा दिलाई। पर्वतीय होली रामलीला से जुड़े जोशी जी बचपन से ही इनकी बैठकों में जुड़े रहे। समाज में बढ़ती उच्छृंखलताओं के कारण उन्होंने अपने को समेट लिया लेकिन बात-व्यवहार में वह समाज को दिशा देते रहे। पिघलता हिमलाय परिवार के वरिष्ठ सदस्य जोशी जी सेवानिवृत्त होने के बाद कालाढूंगी के गुलजारपुर क्षेत्र में परिवार के साथ रहते थे। पिघलता हिमालय परिवार स्व.भुवन जोशी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

होटल
माँ नन्दादेवी
एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
मो.न.
8958525979,
9411134775
फोन सम्पर्क-
05961-222236

गणेश सिंह मर्तोलिया
एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग
मैटीरियल, जनरल आर्डर
सप्लायर्स

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

हल्द्वानी में वेंडिंग जोन विकसित होंगे

हल्द्वानी। नगर निगम ने शहर में वेंडिंग जोन विकसित करने की कवायद तेज की है। निगम ने मंगल पड़ाव, वर्कशॉप लाइन और मण्डी क्षेत्र में वेंडिंग जोन बनाए जाने के लिये जगह चिन्हित कर ली है। अब इन स्थानों पर वेंडिंग जोन के लिये आवश्यक संसाधन जुटाए जाएंगे। निगम की ओर से इन जगहों के अलावा अन्य सम्भावित स्थानों की भी तलाश की जा रही है ताकि सड़कों पर अतिक्रमण के बजाय एक व्यवस्थित सुरक्षित बाजार विकसित किया जा सके।नगर निगम क्षेत्र में वर्तमान में करीब 1800 लाइसेंसधारी वेंडर कार्यरत हैं। अब तक इनके लिए स्थायी जगह निर्धारित नहीं होने के कारण वे सड़कों और बाजार क्षेत्र में ठेले लगाने को मजबूर हैं। इससे आवाजाही में परेशानी होती है, यातायात व्यवस्था प्रभावित है।

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.-
9458920379,
6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान) मो.- 9760342346

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237,
9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल
9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)